प्लास्टिक वेस्ट के रिसाईकलिंग के लिए भी तय हो जिम्मेदारी: प्रो. श्रीवास्तव

शमक विवि में प्लास्टिक प्रदूषण रोकथाम विषय पर कार्यक्रम आयोजित

जगदलपुर। पीएम-उषा मेरू कम्पोनेंट गतिविधि के अंतर्गत शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय में प्लास्टिक प्रदूषण रोकथाम के संदर्भ में सेमिनार और पोस्टर मेकिंग का दो दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने भागीदारी दी।

गुरूवार को आयोजित सेमिनार में कुलपति मनोज कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि पूरे विश्व में प्लास्टिक वेस्ट चुनौतीपूर्ण समस्या के रूप में सामने आई है। रिसर्च के अनुसार 2060 तक प्लास्टिक की मांग तिगुणी हो जाएगी। प्लास्टिक वेस्ट से न केवल खेत की उत्पादकता पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है बल्कि धरती के नीचे पानी की गुणवत्ता भी खराब हो रही है। यहां तक पिछले आठ वर्ष में विभिन्न स्रोतों से 50 फीसद माइक्रो प्लास्टिक हमारे शरीर में बढ़ गए हैं।

प्रो. श्रीवास्तव ने बताया कि सिंगल यूज प्लास्टिक बैन, 120 माईक्रान से कम के प्लास्टिक प्रोडक्ट न बनाने जैसे कई नियम और कानून सरकार ने बनाए हैं पर इससे नियंत्रण कम हो रहा है। दिल्ली और कुछ अन्य शहर छोड़कर अधिकतर शहरों में प्लास्टिक और अन्य वेस्ट को जलाने का कार्य किया जा रहा है। इन्फोर्मल सेक्टर से 60 फीसदी प्लास्टिक कचरे सामने आ रहा है।

प्रो. श्रीवास्तव ने बताया कि भारत में अपशिष्ट में 80 फीसद प्लास्टिक होते हैं। विश्व में 9.3 मिलियन टन प्लास्टिक वेस्ट के साथ इमिटर के रूप में भारत पहले स्थान पर हैं। विश्व में भारत का प्लास्टिक वेस्ट में 20 प्रतिशत का नकारात्मक योगदान है।

प्रो. श्रीवास्तव ने कहा कि जरूरत के मुताबिक प्लास्टिक उत्पादन की स्वीकृति हो पर उसके उपयोग के बाद संग्रहण और रिसाइकलिंग की जिम्मेदारी तय होनी चाहिए। सबसे बड़ी चिंता रिसाइलिंग को लेकर है। जर्मनी जैसे देश अपने उत्पादन और उपयोग का 90 फीसद प्लास्टिक को रिसाइकिल कर लेते हैं जबकि भारत में 12 फीसद प्लास्टिक ही रिसाइकिल हो पाता है।

प्रो. श्रीवास्तव ने कहा कि कुछ कठोर नियम और पनिशमेंट जरूरी है। प्लास्टिक उत्पादक इकाई को इसके रिसाइकिल के लिए आधुनिक टेक्नालॉजी मिलना जरूरी है।

विषय की भूमिका रखते हुए कार्यक्रम संयोजक प्रो. शरद नेमा ने कहा प्लास्टिक अल्टरनेटिव सबस्टीट्यूट है। इसे हम पूर्णतः इग्नोर नहीं कर सकते हैं लेकिन हम दैनिक जीवन में जिस प्लास्टिक का सामान्य कार्यों में इश्तेमाल कर रहे हैं उसे बहुत कम कर सकते हैं। प्लास्टिक के स्वतः रिड्यूज होने में करीब चार सौ वर्ष लगते हैं। इतने वर्ष तक प्लास्टिक हमारे पर्यावरण हो हानि पहुंचाते हैं। प्रो. नेमा ने कहा कि प्लास्टिक जलाना और भी हानिकारक होता है। इससे मानव जीवन के लिए कई घातक रासायनिक गैस उत्पन्न होते हैं।

आभार उद्बोधन में कुलसचिव डॉ. राजेश लालवाणी ने कहा कि जब तक हम किसी चीज के दुष्प्रभाव को नहीं समझते हैं तब तक हम उस समस्या को हल्के में लेते हैं। हम सुविधाभोगी जिंदगी की तलाश में प्लास्टिक प्रदूषण जैसी खतरनाक समस्या के करीब चले जा रहे हैं। हम एकाएक व्यवस्था को बदल नहीं सकते पर जागरूकता के साथ प्लास्टिक के सदुपयोग और रिसाइकिलिंग की प्रक्रिया को अपना सकते हैं।

बुधवार को पोस्टर निर्माण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें लुम्बुनी जोशी, श्वेता डहेरिया, करीना, खुषबू, सोनूराम, जीवन रावत और समृद्धि ने प्लास्टिक वेस्ट और प्रदूषण रोकथाम संबंधी अपने विचार और सुझाव पोस्टर के माध्यम से व्यक्त किए। इस अवसर पर कुलपति प्रो श्रीवास्तव ने नई पहल करते हुए सभी विश्वविद्यालयीन स्टॉफ और कई विद्यार्थियों को ग्लास बॉटल और कॉटन के झोले भेंट किए। पर्यावरण एवं ऊर्जा संरक्षण प्रकोष्ठ के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम में प्रो. एसके कोले, डॉ. वीके सोनी, डॉ एस तिर्की, डॉ. एसके डोंगरे, एसएन रथ, केआर ठाकुर, दुष्यंत मेश्राम, डॉ दिलेश जोशी, डॉ आरके खरवार, डॉ जीएस सौंध, डॉ डीएस पैकरा, डॉ प्रिंस जैन, डॉ. प्रीति दुबे सहित अन्य उपस्थित थे।